पत्थर तोड़ने
वाला आदमी
जापानी लोककथा

पत्थर तोड़ने वाला आदमी

जापानी लोककथा

एक गरीब पत्थर तोड़ने वाला एक चट्टान तोड़ रहा था.

उसका हथौड़ा चला "ठोक".
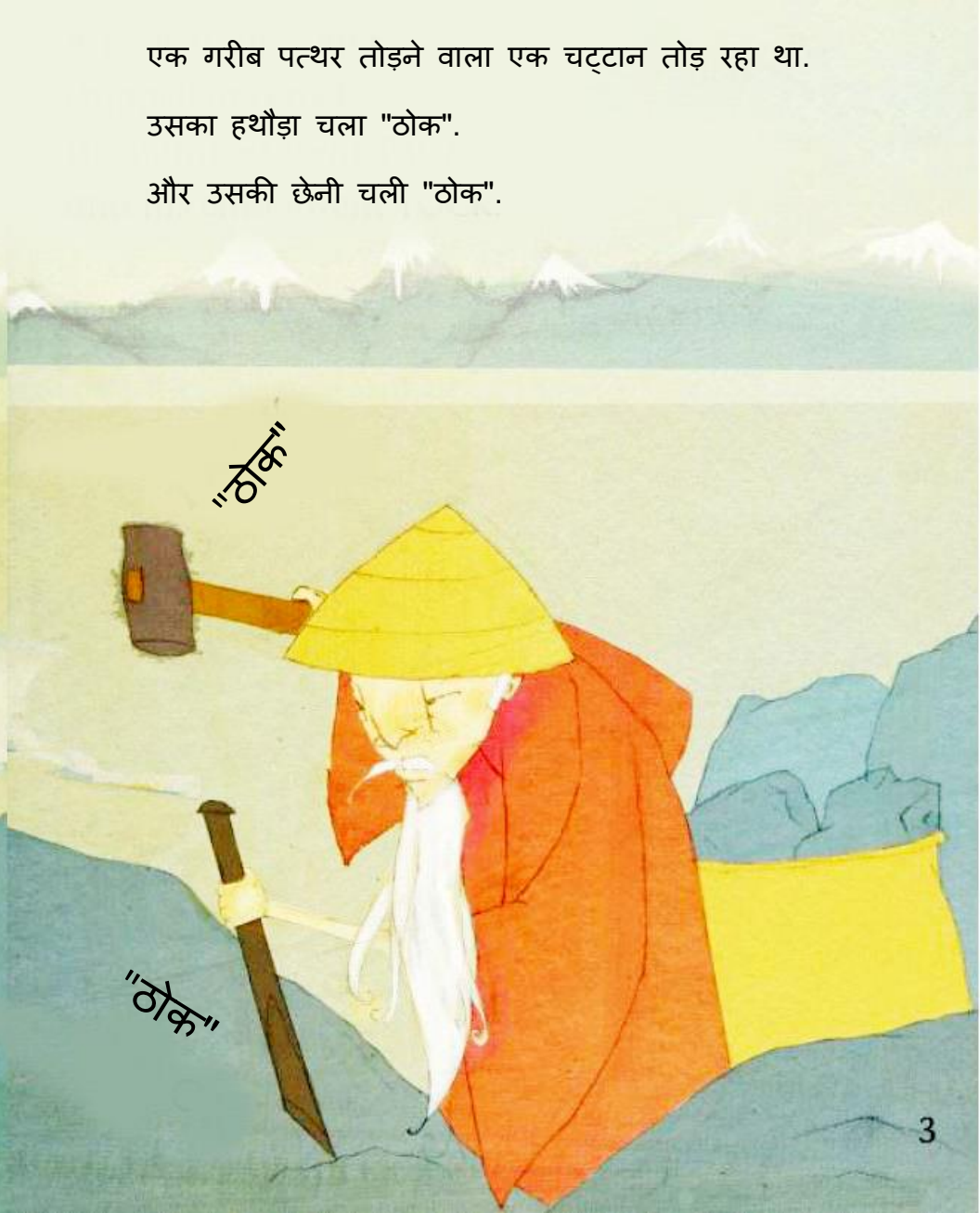
और उसकी छेनी चली "ठोक".

फिर एक धनी आदमी कीमती कपड़े पहने वहां से गुजरा.

"मैं सिर्फ एक गरीब पत्थर काटने वाला हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए एक अमीर आदमी होता."
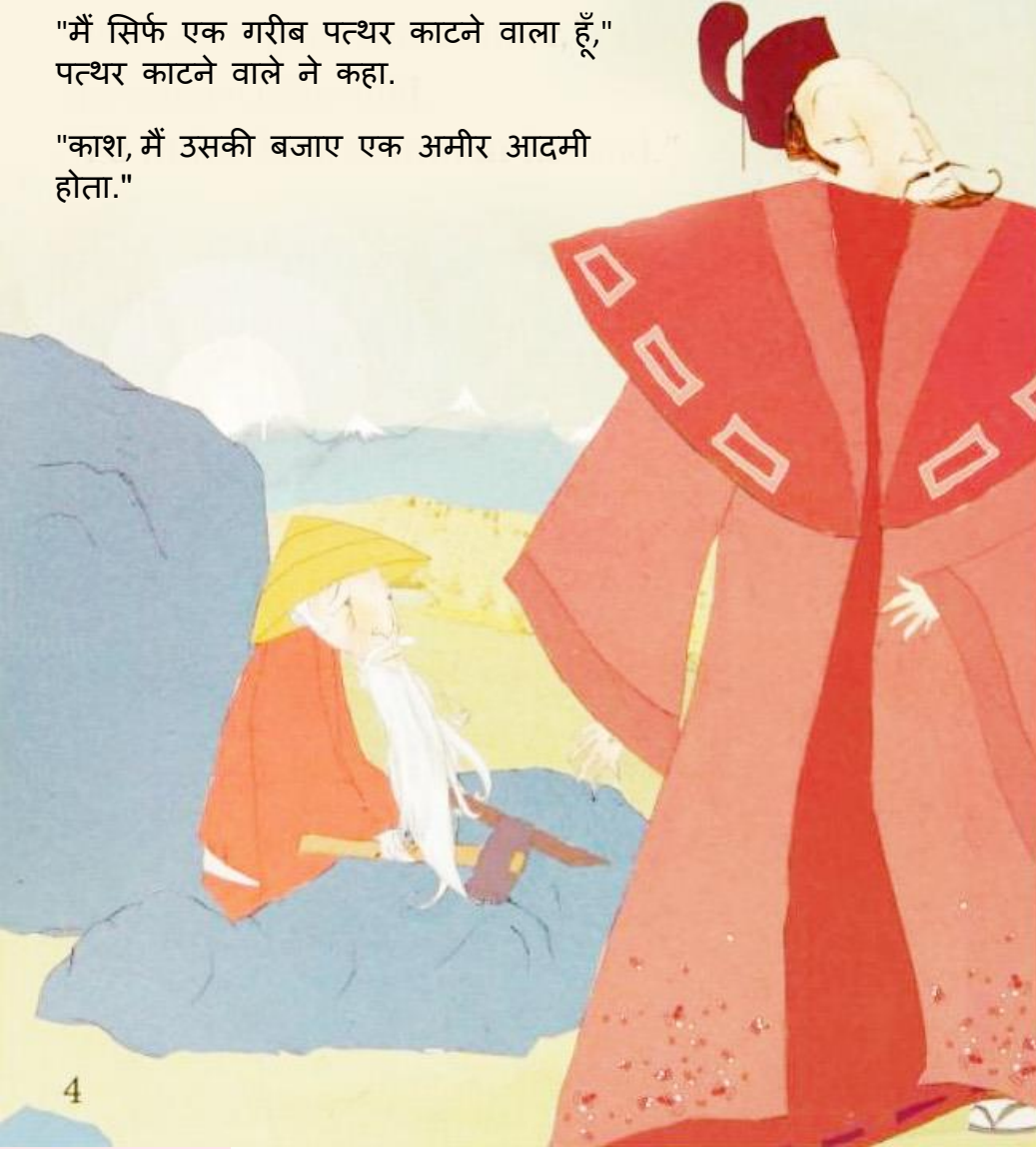
फिर वो एक अमीर आदमी बन गया.

तभी सम्राट अपने नौकरों के साथ राजसी नीले और सोने के कपड़ों में वहां से गुज़रा.

"मैं सिर्फ एक अमीर आदमी हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए एक सम्राट होता."

फिर वो एक सम्राट बन गया.

तभी सूरज निकल आया.

सूरज, किसी भी सम्राट से अधिक भव्य और शक्तिशाली था.

"मैं सिर्फ एक सम्राट हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए सूरज होता."

फिर वो सूरज बन गया.

तभी वहां से एक बड़ा बादल गुजरा.

उसने सूरज की सारी रोशनी और चमक ढंक दी.

"मैं सिर्फ एक सूरज हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए एक बादल होता."
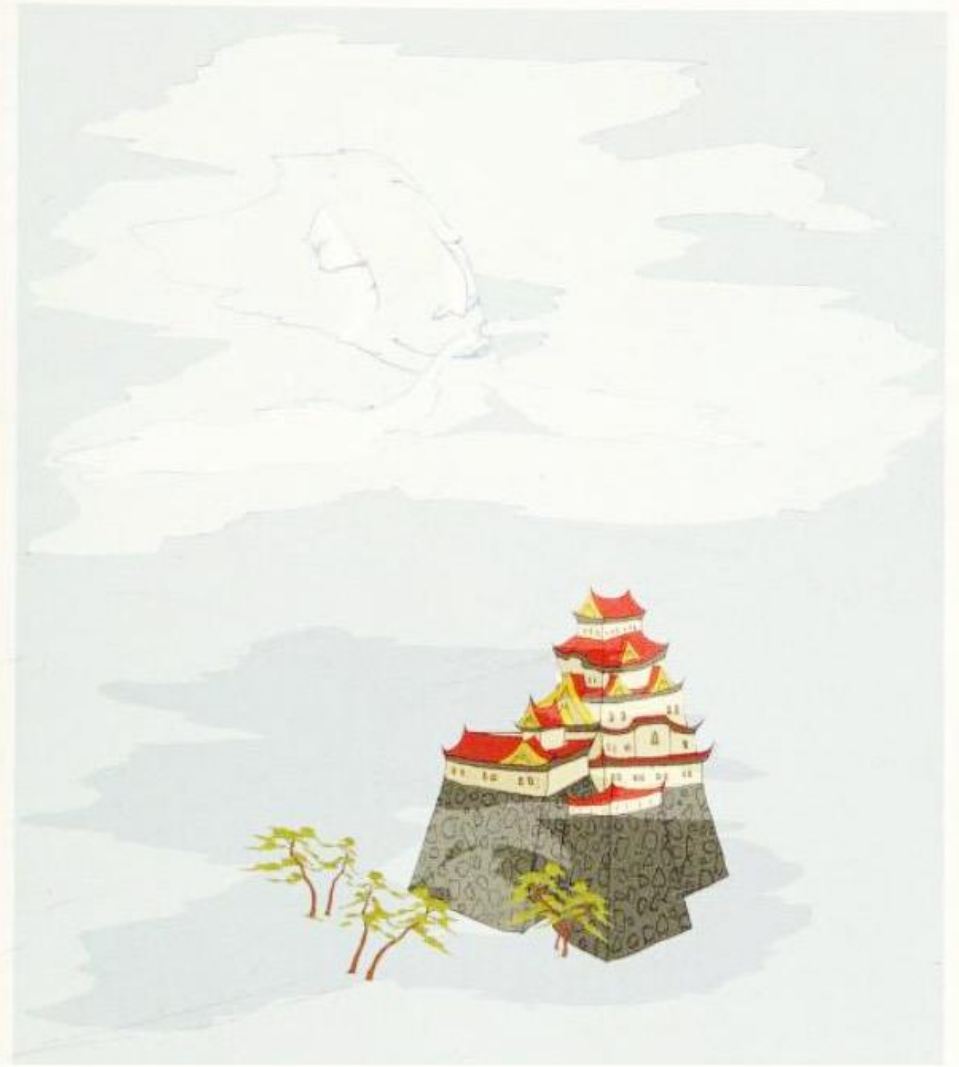
फिर वो एक बादल बन गया.

फिर एक जंगली हवा चली और उसने बादल को आकाश में उड़ा दिया.

"मैं सिर्फ एक बादल हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए हवा होता."
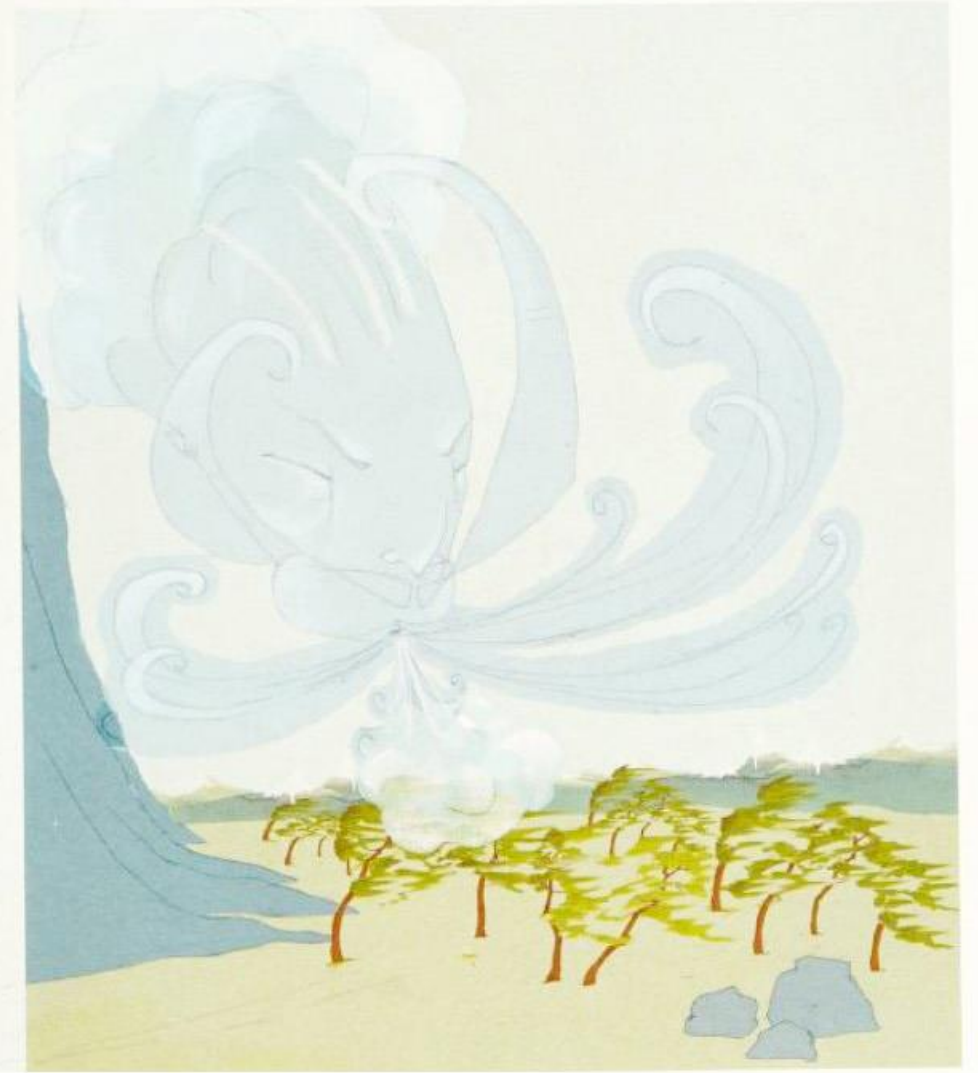
और फिर वो हवा बन गया.
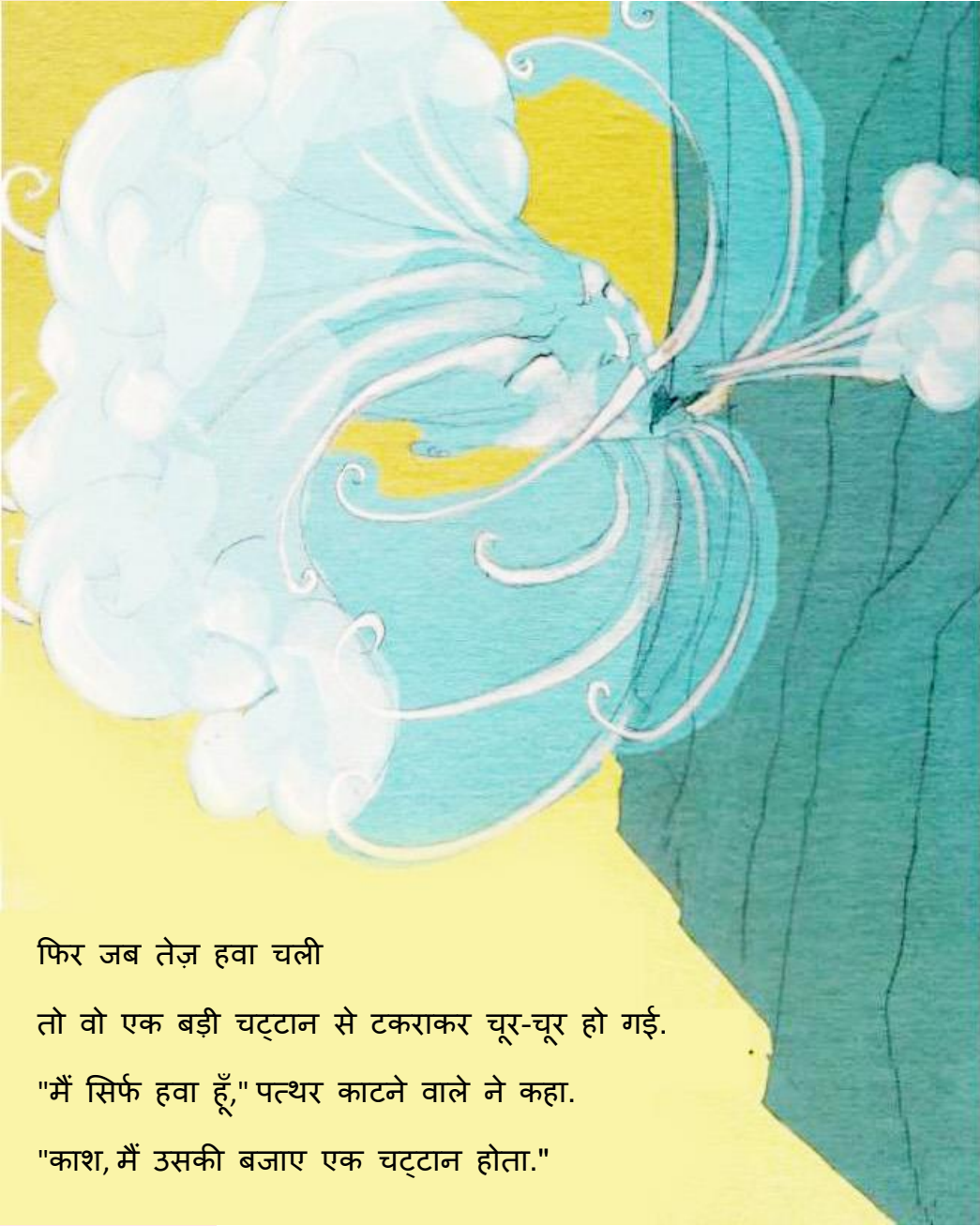
फिर जब तेज़ हवा चली

तो वो एक बड़ी चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो गई.

"मैं सिर्फ हवा हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए एक चट्टान होता."

और फिर वो एक चट्टान बन गया.

तभी उसने महसूस किया कि एक गरीब पत्थर काटने वाला चट्टान को तोड़ रहा था.

"मैं सिर्फ एक चट्टान हूँ," पत्थर काटने वाले ने कहा.

"काश, मैं उसकी बजाए एक गरीब पत्थर काटने वाला होता."

तब वो एक बार फिर एक गरीब पत्थर काटने वाला बन गया.

बेचारा पत्थर काटने वाला चट्टान को तोड़ने लगा.

उसका हथौड़ा चला "ठोक".

और उसकी छेनी चली "ठोक".